बहुवचन

अंक 67

अक्टूबर-दिसंबर, 2020

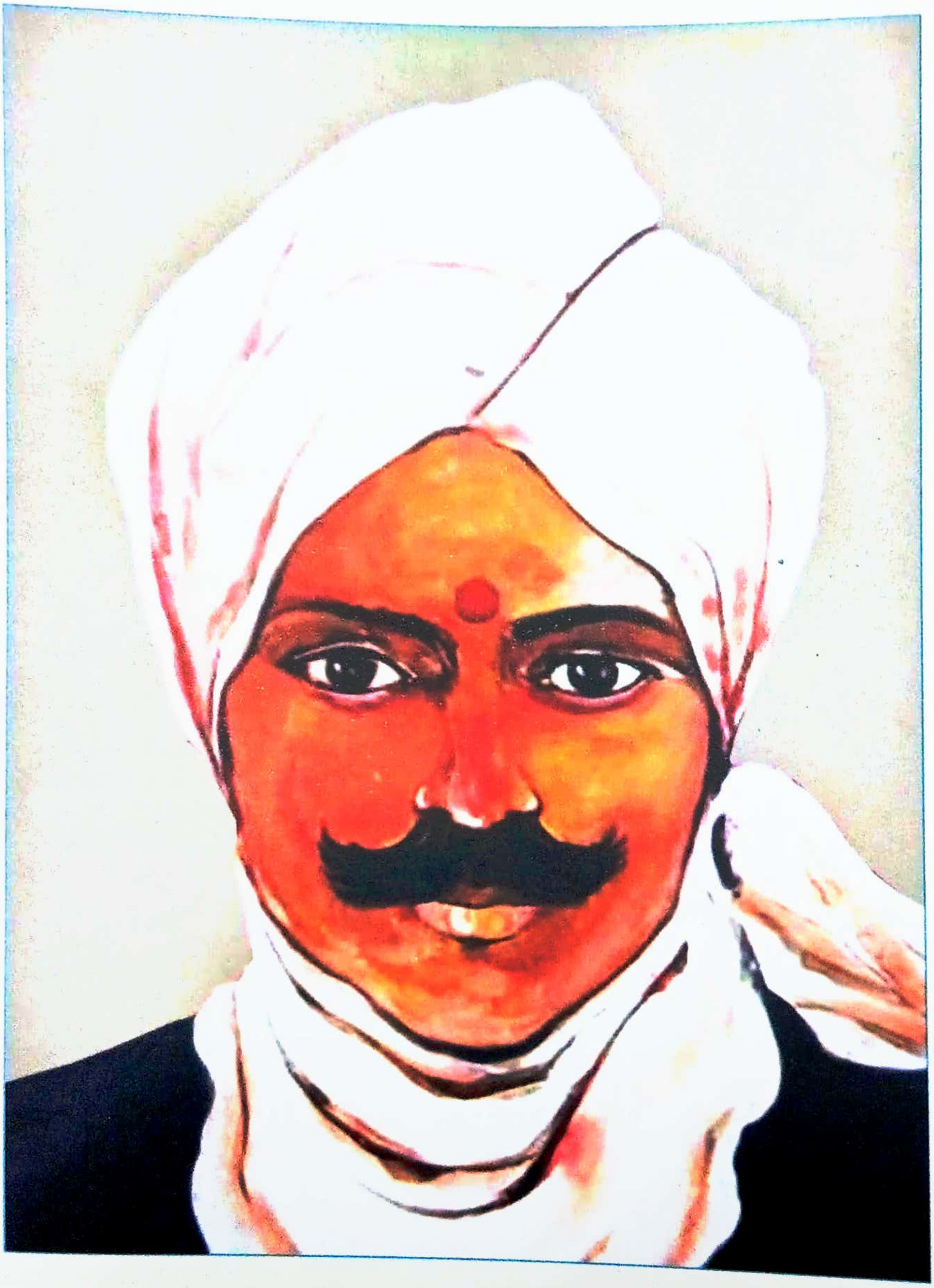

भारत भाव के कवि सुब्रह्मण्य भारती

बहुवचन

हिंदी की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 67 अक्टूबर-दिसंबर, 2020 UGC-CARE Listed, ISSN : 2348-4586

प्रधान संपादक

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

परामर्श

अधिष्ठाता, समस्त विद्यापीठ :

प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल

प्रो. मनोज कुमार

प्रो. कृपाशंकर चौबे

प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी

प्रो. अवधेश कुमार

संपादक मंडल

प्रो. हरमहेन्द्र सिंह बेदी

प्रो. जी. गोपीनाथन

प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी

प्रो. उदय प्रताप सिंह

प्रो. कृपाशंकर चौबे (समन्वयक संपादक)

सहायक संपादक

डॉ. अमित कुमार विश्वास

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रभात प्रकाशन

अनुक्रम

आरंभिक/रजनीश कुमार शुक्ल 5

अवदान-मूल्यांकन

ज्ञान और दर्शन का निकष/एच. बालसुब्रह्मण्यम 7

भारती के काव्य में राष्ट्रीय चेतना/वी. पद्मावती 25

भारती के काव्य में कृष्ण/एम. गोविंदराजन 31

कोयल गीत का वैशिष्ट्य/एस. विजया 45

राष्ट्रभक्ति की परिभाषा देता काव्य/रागिनी कपूर 49

देशभक्ति काव्य का प्रतिमान/दीपिका विजयवर्गीय 55

सुब्रह्मण्य भारती का भारत/कृष्ण कुमार सिंह 63

भारत-स्वाभिमान का कवि/अखिलेश कुमार दुबे 73

आत्मनिर्भर भारत के स्वप्नदर्शी कवि/रामानुज अस्थाना 81

गांधी दर्शन और भारती/ए. भवानी 89

भारतीयता के मुखर प्रवक्ता/एन. लावण्या 93

आधुनिक तमिल साहित्य के पुरोधा/कुमार निर्मलेन्दु 99

स्वतंत्रता संग्राम में भारती का योगदान/राजलक्ष्मी कृष्णन 125

भारती का गद्य साहित्य/कुमार निर्मलेन्दु, पी. के. बालसुब्रह्मण्यन्, एन. सुंदरम्, रमा लक्ष्मीनरसिंहन् 129

कविता

सुब्रह्मण्य भारती की तीन कविताएं/अनुवाद : एच. बालसुब्रह्मण्यम 137

बाल साहित्य

भारती का बाल साहित्य/पूर्णिमा श्रीनिवासन 141

पत्रकारिता

सुब्रह्मण्य भारती की पत्रकारिता/कृपाशंकर चौबे 151

विमर्श

स्वाधीनता और स्वाधिकार की उद्दाम आकांक्षा/प्रतापराव कदम 159

भारती के साहित्य की स्त्री संवेदना/के. वत्सला 'किरण' 165

भारत के नवनिर्माण का स्वप्न/एम. शेषन् 171

देशांतर

रूसी कलाकारों की दृष्टि में भारती/सेतुकुमार, रूपांतरकार : वी.के. बालसुब्रह्मण्य 174

फ्रांसीसी साहित्य से भारती का संवाद/मूल : पुगझेंधी कुमारासामी, अनु. : ज्योतिष पायेङ 180

भाषा चिंतन

तमिल नई चाल में चलने लगी/एम. शेषन् 186

हिंदी सेवा और लेखन के मेरे अनुभव/जी. गोपीनाथन 190

हिंदी भाषा-समुदाय में भाषा-द्वैध (हिंदी-अवधी युग्म का साक्ष्य)/हनुमानप्रसाद शुक्ल 194

भारती का बाल साहित्य

पूर्णिमा श्रीनिवासन

साहित्य मानव के विचारों की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम है। साहित्य अपने ज्ञान के अमृत से समाज तथा संस्कृति दोनों को सार्थक दिशा देने का एक सशक्त पर्याय है। साहित्य के द्वारा मानव की आत्मा व बुद्धि निर्मल होती है।

बाल साहित्य शिक्षाप्रद साहित्य है, जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया जाया है। बाल साहित्य में रोचक, शिक्षाप्रद बाल कहानियां, बाल गीत एवं कविताएं शामिल हैं। प्रस्तुत लेख में राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती के बाल साहित्य के बारे में प्रकाश डालने का लघु प्रयास किया गया है।

तमिल भाषा में बाल साहित्य :

तमिल भाषा में बाल साहित्य बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। 'कुरुन्तोगै' नामक संघ साहित्य, 'सिरुक्कुल' आदि में बच्चों के लिए अथवा बच्चों द्वारा प्राप्त सुख के बारे में लिखा गया है। भक्ति साहित्य में, अलवारों व नयनारों ने भगवान को अपने बच्चे के रूप में मानकर गीत लिखे हैं।

'पिल्लै तमिल' नामक साहित्य में, मात्र बच्चों के लिए गीत लिखने की प्रकृति प्रारंभ हुई। इसके बाद 16वीं सदी में औवयार नामक कवयित्री ने सरल, बोध-गम्य भाषा शैली में 'आत्तिच्चुडी' (नीति परक वाक्यांश) और 'कोन्ड्रै वेन्दन' (नीति परक वाक्य) लिखीं।

इस भांति तमिल में बाल साहित्य का इतिहास संघ काल से ही शुरू हो गया। अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप 20वीं सदी में अन्य भारतीय भाषाओं की भांति, तमिल भाषा में भी पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव पड़ा। इस वजह से उपन्यास, निबंध, नई कविता, गद्य कविता आदि कई साहित्य विधाओं के साथ-साथ 'बाल साहित्य' भी अलग विधा के रूप में विकसित हुआ। तब से आज तक इसका विकास निरंतर गतिशील है।

सन् 1901 में कविमणि देशिय विनायगम् पिल्लै नामक कवि ने 'मलरूम मालयुम' नामक बाल गीत कविता लिखी। सन् 1913 में कविवर सुब्रह्मण्य भारती ने 'पुदिय अत्तिच्चूडि' (नवीन नीतिपरक वाक्यांश) तथा 1915 में 'पाप्पा पाट्ट' (बाल गीत कविता) की रचना की। च. मेय्यप्पन ने 'अरिवियल

आत्तिच्चूडि' रे. मुन्नु गणेसन ने 'मुत्तुच्चूडि' और कवि सो.म. इलवरसु ने 'नीदिच्चूडि' लिखे हैं।

बाल कविता साहित्य में कविमणि देशिय विनायगम पिल्लै, सुब्रह्मण्य भारती, भारती दासन, मणिमंगलम तिरुनावुक्करसु, एन.वी. वेणुगोपाल पिल्लै, अल. वल्लियप्प आदि कवियो के नाम उल्लेखनीय हैं।

तमिल बाल साहित्य को भारती की देन :

राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती ने साहित्य की किसी भी विधा को नहीं छोड़ा, किंतु बाल साहित्य में उनकी लेखनी का चमत्कार असाधारण है। उन्होंने अपनी कई रचनाओं में नीति परक विचारों को व्यक्त किया है। उनकी 'पुदिय अत्तिच्चुड़ि' (नीति परक वाक्यांश) तथा 'पाप्पा पाट्ड' (बाल गीत कविता) नामक रचना बाल साहित्य के अंतर्गत गिनी जाती है। विशेषतः 'पाप्पा पाट्ड' प्रख्यात एवं लोकप्रिय है। यह रचना सरल, बोधगम्य भाषा, गेयता, चित्रात्मकता, प्रभावोत्पादकता, नीति, समसामायिक समस्याएं आदि से भरी हुई है।

नन्हें मन में हमारी भाषा, संस्कृति नैतिक मूल्य, देशभक्ति, विश्वबंधुत्व, आत्म विश्वास आदि गुणों को संवारने में ये गीत सफल एवं सक्षम हैं।

इस लेख में 'पाप्पा पाट्ड' एवं 'पुदिय आत्तिच्चूडि' का विश्लेषण निम्न बिंदुओं के आधार पर करने का प्रयास किया गया है–

देशभक्ति : सुब्रह्मण्य भारती सदैव स्वतंत्र भारत की कल्पना करते हैं। वे अपने देश को हर हाल में स्वतंत्र देखना चाहते हैं। अतः इसका प्रभाव उनके 'पुदिय आत्तिच्चूडि' एवं 'पाप्पा पाट्ड' में भी झलकता है।

नन्हे बच्चे के दिल व दिमाग नाजुक, स्वच्छ एवं साफ होने के कारण अच्छे संस्कारों एवं गुणों रूपी बीज को बोने का सही स्थान मानते हैं। अतः वे बच्चों से यह कहना चाहते हैं कि देश के सुधार एवं विकास के लिए देशभक्ति की भावना आवश्यक है। यही भावना देश के लोगों को एक साथ लाने में मदद करती है। उन्हें प्रेम और हर्ष के साथ-साथ एक-दूसरे की देखभाल करने की खुशी का अनुभव कराती है।

देश के लिए त्याग की भावना, मनुष्य को उत्कर्ष के शिखर पर पहुंचाती है। "वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं"–यही कवि का मानना है।

अपने देश, मातृभूमि की रक्षा करना एवं पूजा करना प्रत्येक प्रजा का कर्तव्य है, कवि के शब्दों में–

"दैसत्तै कात्तल सेय" (देश की रक्षा करो)
"भूमि इर्षदिडेल" (भूमि, देश मत खोना)
"सरित्तिरम् तेरच्चि कोक" (इतिहास की जानकारी रखो)[1]

वे बच्चों से कहते हैं–

तमिल तिरू नाडु तन्नै
पेट्र तायेन्ड कुबिडडि पाप्पा।
(अर्थात् तमिलनाडु को अपनी मां समझकर उसकी वंदना करो)
"आन्ड्रोरगल देशमडि पाप्पा
× × ×
भेद मिल्ला हिंदुस्तानम् - इदै
देयवकेन्डृ कुंबिडडि पाप्पा"[2]
(अर्थात् यह अपने पूर्वज का देश है, इस हिंदुस्तान को भगवान मानकर वंदन करो)

वे कहते हैं कि, अपने देश के किसी भी भाग को खोना मत। उक्त कविता का यही अर्थ निकलता है कि क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद, संप्रदायवाद आदि अराजक तत्त्व, राष्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी बाधा आने पर वह जनता को कमजोर बनाती है। अतः इन अवरोधों को, बुराइयों को दूर करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है।

यह तभी संभव है, जब हम इन नन्हीं कलियों के हृदय को देशभक्ति रूपी पानी से सिंचित करें। तभी वे भावी जीवन में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, राष्ट्र हित एवं विकास के लिए एक दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर, भारत को पुनः सोने की चिड़िया बनाने में सक्षम होंगे। अपने शत्रुओं का विध्वंस करके सशक्त भारत बनाएंगे। भावी पीढ़ी विश्व-शांति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

आत्म विश्वास

"जहां चाह है, वहां राह"
"मन के हारे हार, मन के जीते जीते"

यही आत्म विश्वास की परिभाषा है। चाहे आप जितने ही विद्वान् या धनवान क्यों न हो, यदि आप में आत्म विश्वास नहीं है तो यह विद्या, धन-दौलत किसी भी काम की नहीं।

अतः यह बड़ों का चरम कर्तव्य है कि बाल हृदय में, आत्म विश्वास रूपी बीज बोएं ताकि वे अपने भावी जीवन में आनेवाले किसी भी विपत्ति का डटकर सामना करेंगे, उसमें विजय हासिल करेंगे। उन्हें यह समझाएं कि मात्र रोने से या दुःखी रहने से कुछ फायदा नहीं। इसी को कवि कहते हैं–

"रोदनम नीक्कु" (रोना मत)
"निनैप्पदु मुडियुम्" (धीरज रखो) (सकारात्मक सोचो)
"तुन्बम् मरंदिडु" (दुःख को भूलो)
"सुमयिनुक्कु इकैत्तिडेल"(भार से मत डरो)
"वीरियम् पेरुक्कु" (वीरता को अपनाओ)
"सेयवदै तुणिंदु सेय" (धैर्य से कर्म करो)

"सिदया नेंजु कोळ" (धैर्य धारण करो)
"एरू पोल नड" (सर उठाके जियो)
"नुनि अलवु सेल" (सतर्क रहना)
"तोल्वियिल कलंगेल" (हिम्मत मत हारो)[3]

अर्थात्–किसी भी हालात में आत्म विश्वास मत त्याग दो, वीरता का पोषण करो, असफलता को दूर भागाओ।

"तेम्बि अपुम कुपन्दै नोन्डि-नी
दिडम् कोण्डु पोराडु पाप्पा"
× × ×
पादगम सेयबवरै कण्डाल-नाम
भयम्कोळ्ळल आगादु पाप्पा
× × ×
तुन्बम् नेरुंडि वन्द बोदुम पाप्पा"[4]

आत्मविश्वास वास्तव में एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है। इसकी सहायता से महान कार्यों के संपादन में सहज ही सफलता प्राप्त होती है। अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। यही सफलता की कुंजी है।

आत्मविश्वास से हमारा मन मजबूत एवं खुश रहता है तथा हमारी क्षमता बढ़ती है। वास्तव में हमारी शिक्षा नीति अथवा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मविश्वास प्रदान करना ही है। एकल परिवार होने के कारण आजकल के बच्चे छोटी-सी सफलता को भी स्वीकारने में असमर्थ हैं। विशेषतः परीक्षाफल घोषित करने के बाद, बच्चों में जो उदासी और हलचल मचती है, डर एवं खुदकुशी होती है, इन सबका मूल कारण आत्मविश्वास का अभाव है।

आत्मविश्वास मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी है। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने की जिम्मेदारी बड़ों की है। इसीलिए कवि कहते हैं कि किसी भी हालत में आत्मविश्वास की सहायता से सर उठाकर जिएं, बुरे का सामना डटकर करें। यही जीने का तरीका है। इसी से सफलता हासिल कर सकते हैं।

हमारी भाषा

भाषा मानव मात्र की विशेष संपत्ति है।

"कोस-कोस पर पानी बदले,
बीस-कोस पर बानी", भाषा हमारी संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक है, पहचान है। तमिल परंपरा की यह मान्यता रही है कि–

"स्वदेश और स्व-भाषा हमारी दो आंखें हैं।" अतः इसका पालन-पोषण सतर्कता व सजगता से करना अनिवार्य है।

मातृभूमि और मातृभाषा, सभ्य समाज में, मां का स्थान ग्रहण करती है। इसकी महत्ता अनिर्वचनीय है। अपरिचित लोगों को आपस में जोड़ने की क्षमता रखती है।

मानव भाषा के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। किसी व्यक्ति का संस्कार, उनकी भाषा से व्यक्त होता है। भाषा का विकास निरंतर होता है, तभी उसे जीवंत माना जाता है। भाषा का विकास सभ्यता का विकास होता है। भाषा समाज के विकास की आधारशिला है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति प्राप्त करने में भाषा अहम भूमिका निभाती है।

भाषा से स्मृति, मनन शक्ति और विचार शक्ति का विकास होता है। भाषा के माध्यम से ही पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी को अपना समस्त ज्ञान विरासत के रूप में सौंपती हैं। यही कारण है कि प्रत्येक पीढ़ी, अपने विरासत में अपने भाव-विचार, अनुभव एवं आकांक्षाएं अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। इस प्रकार मानव संस्कार आगे बढ़ता है।

अतः अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा, सम्मान, भक्ति और गौरव की भावना रखनी चाहिए। अपनी भाषा के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील होना चाहिए। इसी को कवि अपने शब्दों में यूं कहते हैं–

"अमिपदिनिल इनियदडि पाप्पा
× × ×
सोल्लि उयर्वु तमिल सोल्ले-अदै
तोपुदु पडिनिडडि पाप्पा"[5]

अर्थात् तमिल की ध्वनि, अमृत से भी मीठी एवं श्रेष्ठ है। इसकी पूजा करनी चाहिए। यहां ध्यान देने योग्य बात है कि भारती मात्र तमिल अथवा संस्कृत भाषा में ही दक्ष नहीं हैं, वे हिंदी, फ्रेंच, तेलुगु एवं अरबी भाषा के भी विद्वान हैं।

तभी वे कहते हैं कि तमिल भाषा, सबसे मीठी एवं श्रेष्ठ होती है। यह गर्व की बात है कि दुनिया की सबसे-पुरानी भाषा, द्रविड़ भाषाओं की जननी है, जो जीवंत है वह हमारी तमिल भाषा है। यह भारत का गौरव है, भारत की अमूल्य निधि है। इसीलिए भारती कहते हैं कि अपनी भाषा, तमिल की आराधना करें।

वे अपनी भाषा में दक्ष होने की वजह से अपने मन की बात सरल, सहज, आम जनता के शब्दों में अभिव्यक्त करने में सफल रहे। आज तमिल भाषा में ही नहीं समग्र विश्व में भी इनका नाम विख्यात है।

नैतिक मूल्य

नैतिकता से सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह मानव जीवन की अनमोल वस्तु है। नैतिक मूल्यों की सहायता से उचित-अनुचित को परख सकते हैं। अच्छे-बुरे का बोध प्राप्त होता है। वास्तव में नैतिकता अंतरात्मा की आवाज है। नैतिक मूल्यों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। यह मूल्य, परिवर्तनशील हैं। देश, काल के अनुरूप बदलती है।

नन्हे बच्चे, जो कच्ची मिट्टी के समान हैं, उन्हें नैतिक मूल्य नामक पानी की सहायता से सही आकार में ढालना अनिवार्य है। नैतिक मूल्य सामाजिक नियंत्रण, रीति-रिवाज, रिश्ते-नाते आदि की जड़ है। किसी भी सभ्य समाज की नींव है।

सदैव सत्य बोलना, भेद-भाव को भूलना, संयम रखना, लोभ-लालच, धोखेबाजी, अहंकार, चुगली करना, दुष्टों को देखकर डर जाना आदि बुराई को त्यागना, इसी को 'भारती बच्चों से यूं कहते हैं–

"ईगी तिरन" (दान करो)
"आण्मै तवरेल" (दक्ष बनो)
"एण्णुवदु उयर्वु" (उच्च लक्ष्य रखो)
"ऐम्पोरि आट्चि सेय" (इंद्रियों को काबू में रखो)
"केडुप्पदु सोर्वु" (बुराई मत करो)
"ओयदल ओषि" (आराम मत करो)
"मानम पोट्रू" (स्वाभिमान रहे)
"नन्रू करूदु" (सकारात्मक सोचो)
"यावरैयुम मदित्तु वाष" (सब का आदर करो)[6]

"पोय सोल्लक कूडादु पप्पा
× × ×
सोम्बल मिगक्केडुदि पाप्पा-नी
डिडम कोण्डु पोराडु पाप्पा"
× × ×
पादनम सेयववरै कण्डाल
× × ×
अवर मुगत्तिल उमिष्न्दु विडु पाप्पा"[7]

नैतिकता के पीछे सामाजिक शक्ति मानव कल्याण का श्रेष्ठ साधन है। असंतोष, अलगाव, उपद्रव, असमानता, अवसाद, संघर्ष अनिश्चितता, प्रतिस्पर्धा आदि से मुक्ति पाने के लिए नैतिक मूल्य को अपनाना लाभप्रद सिद्ध होता है।

यदि बच्चे के परिवेश में नैतिक तत्त्व पर्याप्त मात्रा में हैं, तो उनका जीवन उज्ज्वल होगा। यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास एवं कल्याण में विशेष योगदान प्रदान करता है। नैतिक मूल्यों से मानव अपने उत्तरदायित्व के बारे में सतर्क रहता है एवं उसे संपूर्ण रूप से निभाता है। सभी से प्रेम पूर्ण व्यवहार अपनाता है।

प्रकृति

प्रकृति मानव जीवन का अभिन्न अंग है। मानव, प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट देन है। डार्विन के 'सर्वाइवल ऑफ दि फिटेस्ट' (Survival of the fittest) विकासवाद सिद्धांत के अनुसार, समय व परिवेश के गतिशील परिवर्तन के फलस्वरूप एक कोशिकीय जीव से मानव तक की यात्रा सफल रही।

डरना, भागना, छल-कपट, मारना, अपहरण करना, चोरी करना, शोषण करना, औरों पर अधिकार जमाना आदि मानव की जो प्रवृत्ति है, वह वास्तव में पशु-पक्षी, जानवर रूपी अपने पूर्वजों की देन है। मानव अपने सतत् प्रयास से, अपने को परिष्कृत कर जीवन में आगे बढ़ा।

अतः विश्व में व्याप्त स्थावर जंगम प्रकृति का अंग है। वे मानव के पूर्वज हैं। यही कारण है कि हमारे हिंदू धर्म में अपने किसी भी आराध्य का वाहन जानवर ही होता है। उसी भांति प्रत्येक मंदिर में एक स्थल वृक्ष भी होता है। इसका यही अर्थ है कि पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम, सभी स्तुत्य एवं वंदनीय हैं। उसकी देखभाल एवं रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

वातावरण में सुख-शांति एवं स्वच्छता प्रदान करने में पेड़-पौधों की भूमिका अमूल्य है। ताजा कोंपल, हंसते फूल, हिलती डाली और टहनी, ठंडी हवा, ये सब हम से बातें करते हैं। हमें ईश्वर का संदेश सदा-सर्वदा देते रहते हैं। परंतु हम जैसे मंदबुद्धि, संकीर्ण विचारवाले मानव उसे समझने में असमर्थ एवं असफल रहते हैं।

प्रकृति ईश्वरीय देन है, संपत्ति है। यदि हम उसकी रक्षा करेंगे तो वह हमारी रक्षा करेगी। कवि के शब्दों में :

"न्याइरू पोट्रू" (सूर्य की पूजा करो)[8]

प्रकृति हमें सुख शांति प्रदान करती है, पालतू जानवर मानव की सेवा करते हैं, गाय से दूध मिलता है, कुत्ता घर की रक्षा करता है, घोड़ा वाहन का भार ढोता है। अतः हमें उनकी रक्षा एवं सहयोग करना चाहिए। इसी को कवि बच्चों से कहते हैं–

"चिन्नजूचिरू कुरूवि मोले - नी"[9]

"वण्णप् परवै गलै कण्डु - नी
× × ×
आदरिक्क वेणुमडि पाप्पा"[10]

स्वास्थ्य

"पहला सुख निरोगी काया" (Healthy mind in a healthy body)

'शरीरम् देव मंदिरम्', 'शरीरमाधं खलु धर्म साधनम्' आदि कथन मनुष्य के स्वास्थ्य की महत्ता को घोषित करता है। विशेषतः कोरोना पीड़ित इस संदर्भ में यह अत्यधिक प्रासंगिक है।

हमारे पास ढेर सारी धन-दौलत हैं, पर उसका मजा लेने में यदि हमारा शरीर, सेहत हमारा साथ नहीं देती तो उस धन-दौलत से क्या फायदा है?

मात्र सुख भोगने के लिए ही नहीं, अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, जीवन को आगे बढ़ाने के लिए भी स्वस्थ रहना अनिवार्य है। हमारा शरीर दृढ़ और वज्र होने से ही हम अपने शत्रुओं से अपने देश की रक्षा कर सकते हैं। अपने परिवार, बंधु और देश की देखभाल कर सकते हैं। इसीलिए भारती बच्चों से कहते हैं–

"उडलिनै उरूदि सेय" (शरीर दृढ़ रखो)
"औडदम कुरै" (औषध का सेवन घटाओ)
"मूप्पुक्कु इडम कोडेल" (बुढ़ापा से बचो)
"यौवनम् कात्तल सेय" (यौवनावस्था को बरकरार रखो)"[11]

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ्य विचार का स्रोत है। स्वास्थ्य का प्रभाव क्रियाशीलता पर पड़ता है, इसीलिए कवि कहते हैं कि सेहत का ख्याल रखना और दवाई लेने की परिस्थिति से बचना। युवा की तरह सदैव क्रियाशील रहने से बुढ़ापा को लात मार सकते हैं। ध्यान-तप करने से दिमाग शांत रहता है। हम चुस्त-दुरूस्त रहेंगे तो सब के दिल आसानी से जीत लेंगे। स्वस्थ दिमाग में ही सकारात्मक विचार का उद्‌भव एवं संचार होता है। आलसीपन दूर हो जाता है।

लाखों में कमाकर, करोड़ों में इलाज करने से क्या लाभ? अपने सेहत की रक्षा के लिए नियमित जीवन शैली, व्यायाम, खान-पान, आराम, सकारात्मक सोच और ईश्वरीय भक्ति, पूजा-पाठ का पालन अनिवार्य है।

अतः कविवर इसी सुनियोजित जीवन शैली की शिक्षा को अपनाने के लिए बच्चों से अपने शब्दों में यूं कहते हैं–

"ओडि विळैयाडु पाप्पा-नी
ओयां देरूक्कलागादु पाप्पा
× × ×
कालै एषुन्दकड़न पडिप्पु पिन्पु
x x x
येन्रू वषक्कप्पडिल्सि कोळकु पाप्पा"[12]

विश्व बंधुत्व

यह समय की मांग है। विश्वभर में व्याप्त असुरक्षा अनिश्चितता को लात मारने के लिए विश्वबंधुत्व रूपी अंकुश की सख्त जरूरत है।

समता की भावना, विश्वजन को अपने भाई-बहन मानना ही विश्वबंधुत्व की आधारशिला है। अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा है।

तमिल परंपरा इसी को 'युदुम ऊरे यावरूम केळिर' तथा 'ओन्ड्रे कुलम्, ओरूवने देवन' कहती है, अर्थात् "समग्र विश्व अपना है, सभी अपने मित्र-बंधु हैं।" तथा "एक ही कुल है, एक ही ईश्वर है।"

इस वैश्विक सामाजिक दृष्टिकोण को अपनाएं तो आपसी भेद-भाव, बैर-भाव, जातिवाद, क्षेत्रीयतावाद अलगाववाद, भाषावाद, सांप्रदायिकता आदि कुटिल संकीर्ण भाव से बच सकते हैं। सांसारिक राग-द्वेष, लोभ-लालच, आपा-धापी, तनाव, कुंठा आदि पतनशील प्रवृत्तियों का त्याग और उदार चिंतन को अपनाएं तो विश्वशांति का कुंज बन जाएगा।

भारती यही पक्ष लेते हैं कि जाति नाम की कोई वस्तु नहीं है। सब समान हैं, प्रेम पूर्ण व्यवहार करने वाले ही श्रेष्ठ हैं। ऊंच-नीच का भेदभाव वास्तव में पाप रूपी नरक को खोलता है। भावी भारत का यह स्वच्छ चिंतन संवारने का आह्वान कवि यूं करते हैं–

"जादिगल इल्लैयडि पाप्पा-कुल
× × ×
निरय उडयवरकळ मेलोर"[13]

वे यह भी कहते हैं कि एकता में बल है, अतः साथ रहना व साथ खेलना है। कवि के शब्दों में–

"कूडि तोषि़ल सेय" (साथ मिलकर काम करो)
"ओट्रूमै वालिमयाम" (एकता में बल है)[14]

"कूडि विलैयाडु पाप्पा"[15]

अतः सभी धर्म, जाति, देश, संस्कृति आदि को सहिष्णुता एवं संयम भाव से देखना, अपनापन एवं आत्मीयता से सब के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना, समृद्ध, उत्कृष्ट एवं सुखी-शांतिमय जीवन की बुनियाद है।

हमें अपने नन्हें बच्चों के दिलो-दिमाग में यही बीज बोना है कि एकता में बल है, वही एकता का राज है। उन्हें यह समझाना है कि भारत में व्याप्त विभिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति, भौगोलिक असमानता आदि तमाम भेदभाव के बावजूद हम सब में भारतीयता की भावना अक्षुण्ण है, अर्थात् हम भारतीय, अनेकता में एकता को निभाते हैं। इसी कारण हम मजबूत देश की नींव डाल सकते हैं।

निष्कर्षत : भारती की कविताओं से हम जान सकते हैं कि विश्वबंधुत्व एवं देशभक्ति की भावना ही उनके प्राण हैं। वे बच्चों के मन में वे ही बीज बोना चाहते हैं, जिससे भावी नागरिक के रूप में अपने आपको सफल एवं श्रेष्ठ सिद्ध कर पाएंगे। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं, तो भी हम देखते हैं कि आज की युवा पीढ़ी उनके सपनों को साकार कर रही हैं।

संदर्भ-सूची :

1. भारती, पुदिय आत्तिच्चूडि. भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 210
1. भारती, पाप्पा पाट्टु. भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 212

3. भारती, पुदिय अत्तिच्चूडि, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 210, 211
4. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 212
5. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 213
6. भारती, पुदिय अत्तिच्चूडि, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 209, 210, 211
7. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 212, 213
8. भारती, पुदिय अत्तिच्चूडि, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ,* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 210
9. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 211, 212
10. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 212
11. भारती, पुदिय अत्तिच्चूडि, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 209, 210
12. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 211, 212
13. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 211, 212
14. भारती, पाप्पा पाट्ड, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 211, 212
15. भारती, पुदिय अत्तिच्चूडि, भारतियार कवितैनाल. *भारदम पोट्रूम भारदियार कविदैवाळ.* चेन्नई : लियो बुक पब्लिशर्स. पृ. 209, 210

□